

अंक्रिया 2-9-1966

पृष्ठा... 2... कलम

१८ ००९

जराजीर्ण कुल उबल

गत शनिवारे दैनिक इतिहासके नाम संकेते आकीर्ण अदेशेर विभिन्न कुल सम्पर्के एक दीर्घ रिपोर्ट प्रकाशित हइयाछे। उत्तर-पूर्बाञ्चले सुनामगञ्जेर ताहिरपुर हइते दक्षिण-पश्चिमाञ्चलेर बागेरहाट पर्वत देशेर विभिन्न ज्ञानेर जराजीर्ण कुल डबनसम्मुहर प्रतिच्छवि बड़इ करणे। कुले शिक्षार सरजामेर अडाव। कोथाओ विजानेर षष्ठपात्रिर घाटति, कोथाओ भुगोल पड़ाइ-बार उपयोगी व्यावस्था पर्वत नाइ। एमनकि कोन कोन कुले टुल-बेझिर अडाव ओ प्रकट। छात्र-शिक्षकेर रेशिओ वा हारेर कथा उपर्युक्त ना कराइ हयतो उचित, कारण अन्य देशेर तुलनाय ताहा बड़इ लज्जाकर। ताल शिक्षकेर कथा वाद दिमेओ, घायेर प्राय प्रतिटि कुले शिक्षकेर घाटति निदारण। ताल शिक्षक वा आदर्श शिक्षक एथन अन्यथः अतीतेर विषयवस्तु हइया। उठितेहे। अवश्य इहार पेहचने रहियाछे हाजारो सामाजिक ओ अर्थवैतिक कारण ओ समस्या।

आमादेर दाउदकाली संवाददाता खबर दियाछेन, गोरि पर शुल आक्षताव उच्च विद्यालय डबनटीर छाने फाटल धरियाछे, टुकरा टुकरा हइया डाङिया पड़ितेहे। एই खबर ताकार जगताथ हलेर दुर्घटनार कथा समरण कराइया देऱ। ताकार नवाबगञ्ज उपज़ेलार कवि कायकोबाद बालिका विद्यालयेर पाका डबनटीर निर्माणेर कयेक दिनेर मध्ये इधसिया पड़ियाछे। एই संवाद सज्जे मने पड़े ताकार रामपुरा ब्रीजसह एदेशेर वह सरकारी डबनेर दुरबस्तार कथा, दुर्दशार कथा।

विद्यालयेर अव-काठामो निर्माणेर क्षेत्रे एकटि विषये चिन्ता-जावनार यथेष्ट अवकाश आहे बलिया आमरा मने करि। जातीय जीवनेर अन्यान्य क्षेत्रेर मत, आमादेर शिक्षा जीवनेओ बेसरकारी उद्यम ओ व्यक्तिउद्योगे वेन डाटा पड़िया गियाछे। अर्थात् राष्ट्रिय आमजे,

एमनकि पाकिस्तानी आमजे ओ शिक्षा क्षेत्रे बेसरकारी उद्योग द्वाक्षर राखिया गियाछे अनेक सुमहान कीतिर।

एकदा 'शिक्षा इनिजिासिटी' परिहासे निर्दित आमादेर एই ताका विश्वविद्यालय छापनेर क्षेत्रे उ सरकारी उद्योगेर पाशपाश बेसरकारी उद्योग ओ उदामेर बथाओ एই प्रसजे समरण करा शाईते पारे। नेपाल यार सलिमुल्लाह, नेपाल याब नेपाल आजी चौधुरी, ए, के, फजलुल हक प्रमुख अनेकेहे निजस्व द्रव्य, साधना ओ तहविम द्वारा शिक्षा विज्ञारे ओ शिक्षार अवकाठामो निर्माणे सुमहान अवदान राखिया गियाहेन। रनदा प्रसाद साहा ओ करितियार ओयाजेद आजी थान पर्नीर अवदान ओ एदेशेर शिक्षा विज्ञारे समरणीय हइयाछे। किंतु आज आमरा सब क्षेत्रे सब किछुर जन्याइ सरकारेर दम्पा-दाक्षिण्य ओ दान-खयरातेर उपर वेन बड़ बेशी निर्भर-शील। आर सेहि सबे हारा-हिया फेलितेहि आमादेर अकील उद्यम।

पक्षास्तरे शिक्षा क्षेत्रे आजो देखा याय, निर्माणीरा ताहादेर निजेदेर उद्योगे विद्यालय विद्यालयेर परिचालना करितेहेन एवं सेहि सब विद्यालये शिक्षार मानउ उमत। बांगादेश अधीन 'होपार पर बेसरकारी कुल-कलेज आर आगेर मत कृतिक्ष प्रदर्शन करितेहे ना। बरक बमा याय, शिक्षा व्यवस्थार सर्वथासी डाटार टाने अधिकांश बेसरकारी विद्यालय आज सकल दिक दियाहि जराजीर्ण—टुस-बेझ, कुल-डबन, शिक्षक, शिक्षार मान ओ परिवेश सर्वक्षेत्रे। अर्थात् जातीय बाजेटेर एकटा बड़ अंश एथन शिक्षाखाते वार हइतेहे। ताई शिक्षार गोटा काठामो पर्वामोचना करिया मतुन दिक निर्देशनार समय आसियाछे बलिया आमरा मने करि।